"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 06, Nov.-Dec. 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

इलेक्ट्रानिक संसाधन : एक अध्ययन
Electronic Resource: A Study

प्रवीन कुमार पाण्डेय
प्रवक्ता
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
बाबू जयशंकर गया प्रसाद पी0जी0 कालेज
सुमेरपुर, उन्नाव, उ0प्र0 (भारत)

डा0 शिव कुमार सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
प्रताप बहादुर पी0जी0 कालेज प्रतापगढ़,
उ0प्र0 (भारत)

रविकान्त सिंह
लाइब्रेरियन
पुरूषोत्तम श्री राम डिग्री कालेज नन्दना
घाटमपुर कानपुर नगर, उ0प्र0 (भारत)

आलेख कुमार श्रीवास्तव
कैटलागर
दयानन्द सुभाष नेशनल महाविद्यालय
उन्नाव, उ0प्र0 (भारत)

1–सार (Abstract)- *ई– संसाधन एक एसा माध्यम है जो कि उपयोगकर्ता के पास समय की कमी को देखते हुए इलेक्ट्रानिक संसाधन के माध्यम से उपयोगकर्ता या शोधकर्ता को सूचना उपलब्ध कराने पर बल दिया जा रहा है तथा आलेख से यह उभरकर सामने आया कि उपयोगकर्ता की जिज्ञासा को ध्यान में रखकर ई– संसाधन से उनकी जिज्ञासा को शान्त किया जाता है। आज के आधुनिक समय में इण्टरनेट वह सेवा है जोकि कहीं पर भी किसी भी समय सूचना को प्राप्त .किया जा सकता है। कहती है दुनिया की पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ सच्ची दोस्त है। लेकिन वर्तमान समय में जमाना बदल गया है उपयोगकर्ता के पास समय की कमी होती जा रही है जो कि ई– संसाधन के माध्यम से आसानी से उपयोग किया जा सकता है जिससे कि समय की कमी तथा धन की कमी पर अधिक से अधिक से उपयोगकर्ता की सूचना सुलभ कराने में ई–*

संसाधन एक वरदान सिद्ध हुआ है। शोध से यह भी उभरकर सामने आया है कि सभी पुस्तकालय की जानकारी ई – संसाधन के माध्यम से उपलब्ध कराया जा सकता है जोकि सभी प्रकार की सामग्री ई– संसाधन की सहायता से प्राप्त किया जा सकता है। उपयोगकर्ता के पास समय की कमी होती जा रही है जोकि सभी ग्रंथों को अध्ययन का तरीका भी परिवर्तित हुआ। अब जमाना इलेक्ट्रानिक संसाधन का है जो सभी ग्रंथों अब इलेक्ट्रानिक स्वरूप पर संग्रह किया गया। आलेख के द्वारा यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि प्रलेखों इलेक्ट्रानिक रूप में पाठको और छात्रों के बीच किस तरह स्थापित हो रहा है तथा इससे पाठक को क्या लाभ मिला है। हर प्रकार की सामग्री का पढ़ने का तरीका परिवर्तित हुआ है। अब जमाना इलेक्ट्रानिक है तो सामग्री भी इलेक्ट्रानिक हुई है। इलेक्ट्रानिक संसाधन ट्रेड तेजी से जोर पकड़ रहा है तथा उपयोगकर्ता से यह पता चलता है कि जो लोग मुद्रित ग्रंथ से दूर चले गये थे वह अब इलेक्ट्रानिक संसाधन के माध्यम से पढ़ने लगे हैं। मुद्रित सामग्रियों के बजाय पाठक इलेक्ट्रानिक प्रिंट अधिक बेहतर मानते है। उपयोककर्ता के दौरान एक बड़ी बात सामने निकल कर आयी कि अभी भी ई– सामग्री के पढ़ने वालों में एकाग्रता की कमी होती है तथा वे अपने विषय को बेहतर नही समझ पाते हैं। अपनी उपयोगिता और उपयोगकर्ता की रुचि को देखते हुए आने वाले समय में ई– संसाधन का महत्व बहुत अधिक बढ़ रहा है।

परिचय(Introduction)- इलेक्ट्रानिक संसाधन सहभागिता का सम्बन्ध पुस्तकालय सहयोग के क्षेत्र में पुस्तको के आदान प्रदान से है इसके अन्तर्गत सहभागी पुस्तकालय अन्य पुस्तकालय की आवश्यक सहयोग प्रदान करने के साथ साथ दूसरो से यथासम्भव सहयोग प्राप्त

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 06, Nov.-Dec. 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

करने की अपेक्षा भी रखता है। आधुनिक समय में विभिन्न तकनीको के विकास के साथ ही हर प्रकार की सामग्री संसाधन सहभागिता के क्षेत्र में व्यापक सम्भावनाएँ बढ़ रही है। इलेक्ट्रानिक संसाधन की सहायता से कम्प्यूटर पर आधारित ग्रन्थपरक डेटाबेस एवं आनलाइन सूचियों के निर्माण एवं खोज के फलस्वरूप उस क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण बढ़ गया है।

इलेक्ट्रानिक स्वरूप में उपलब्ध सूचना संसाधन की सहभागिता करना या नेटवर्क का इस्तेमाल कर पुस्तकालयों द्वारा संसाधन का आदान प्रदान करना काफी आसान है। वर्तमान समय में कई प्रकार के पुस्तकालयों द्वारा आपसी समझौता कर ई – डाक्यूमेन्ट्स की खरीद की जाती है इसको सभी पुस्तकालय द्वारा उपयोग में लाया जाता है। आधुनिक समय में इलेक्ट्रानिक संसाधन के युग में विभिन्न प्रकार के पत्र – पत्रिकाएँ ई – प्रलेख ई – मेल ई– बुक्स इत्यादि इलेक्ट्रानिक स्वरूप में उपलब्ध है तथा पेपर मुद्रित पाठ्य सामग्री को इलेक्ट्रानिक स्वरूप मे उपलब्ध कराया जा रहा है। इलेक्ट्रानिक सूचना मशीन द्वारा पठनीय है तथा इसे कम्प्यूटर साफ्टवेयर द्वारा खोजा जा सकता है। इलेक्ट्रानिक संसाधन की सहायता से सूचना का स्थानान्तरण भी दूरस्थ स्थानों तक आसानीपूर्वक किया जा सकता है। सूचना संग्रहण, वितरण और स्थानान्तरण में इलेक्ट्रानिक माध्यमों के अन्तर्गत सर्व सुलभ कराया जा सकता है।

ई– बुक्स (E-books)- इण्टरनेट एवं वेब तकनीक ने अन्य क्षेत्रों की तरह प्रकाशन को भी अपना पदार्पण कर लिया है। जिससे प्रकाशन के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्तियों को संस्थाओं को एक नई दिशा प्रकाशन की प्राप्त हुई है जिसे हम ई – प्रकाशन का नाम देते है। इलेक्ट्रानिक विधियों से ग्रन्थ के प्रकाशन को ई – बुक्स कहा गया है। जब इलेक्ट्रानिक माध्यमों

से ई– प्रकाशन एवं जब इलेक्ट्रानिक सामग्री की उपलब्धता पुस्तकालय में होती है तो इसे ई–लाइब्रेरी की संज्ञा देते है। अतः ई– प्रकाशन से ई – बुक्स ,ई पत्रिकाएँ, ई– मैगजीन, ई–बुलेटिन आदि प्रकाशित किया जा रहा है।

ई– बुक्स ग्रन्थों या पुस्तको का डिजीटल रूपान्तरण है जो इलेक्ट्रानिक विधियों से संग्रहीत एवं प्राप्त किये जा सकते है तथा इन्हें एक पर्सनल कम्प्यूटर से या किसी सामान्य रूप से काम में ली जाने वाली विधि द्वारा अथवा ई–बुक रीडर की सहायता से पढ़ा जा सकता है। इस प्रकार ई– बुक्स कई तरह की पूरी कुशलता का एक साधन है। इन्हें आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। ये मुद्रित पुस्तको से अधिक उपयोगी तथा लाभदायक होते है

ई– बुक्स के लाभ–

1– ई– बुक्स कम स्थान घेरती है।

2– यह शीघ्रतम प्राप्त की जा सकती है।

3– यह आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। तथा साथ ही डेक्सटाप, कम्प्यूटर , नोटबुक तथा ई– मेल रीडर पर अनेक ग्रन्थों को देखकर अपनी वांछित सूचनाओं को प्राप्त किया जा सकता है।

4– ई– बुक्स के साथ कुछ अतिरिक्त सूचनाएँ भी उपभोक्ताओं को प्राप्त होती है। अधिकांश ई– बुक्स बोनस के रूप में अन्य अतिरिक्त सूचनाएँ जो प्रायः एक मुद्रित ग्रन्थ के क्रय करते समय नही प्राप्त किया जा सकता है। विक्रय होती है।

5– यह प्रत्येक क्षण संशोधित तथा अद्यतन की जा सकती है।

6– इससे विश्व के किसी भी स्थान पर खोज किया जा सकता है तथा सूचनाएँ भी त्वरित गति से प्राप्त की जा सकती है।

7– ई– बुक्स के निर्माण में अत्यन्त कम प्राकृतिक संसाधनों उदाहरण स्वरूप लुग्दी, धागा, कागज, गत्ता इत्यादि की आवश्यकता होती है।

ई– प्रलेख (E- document)- सूचना के प्रसार एवं स्थानान्तरण में सम्प्रेषण हेतु प्रलेखीय स्रोतों के अतिरिक्त कुछ ऐसे सूचना स्रोत भी होते हैं जो अप्रलेखीय स्रोंतों की श्रेणी में गिने जाते है क्योंकि इसमें कागज का उपयोग नही होता अर्थात ये कागजहीन होते है। इस प्रकार के स्रोतों को कागजेत्तर स्रोत कहते है तथा इनकी संख्या में अब तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। इन स्रोतों मे माइक्रोफार्म दृश्य श्रव्य सामग्री तथा इलेक्ट्रानिक प्रारूप में सूचना स्रोत आदि सम्मिलित होते है। इन्हें इलेक्ट्रानिक रूप में निहित सूचना साधनों को इलेक्ट्रानिक प्रलेख तथा संक्षेप मे ई– प्रलेख कहते है तथा ई– प्रलेख सूचना सम्प्रेषण का वह माध्यम है जो इलेक्ट्रानिक माध्यमों से सूचनाओं का सम्प्रेषण करते है जैसे– सीडी, डी वी डी ई– मेल इण्टरनेट , फैक्स आदि।

मुद्रित ग्रन्थों में अनेक गुण होते हुए भी कुछ कमियाँ भी होती है क्योंकि इनमें सूचना को खोजना और उसे प्राप्त करना अत्यन्त श्रम साध्य कार्य होता है। इसलिए कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के प्रादुर्भाव के फलस्वरूप इन कमियों को भी दूर करने के प्रयासों के कारण ई– प्रलेखों का उद्भव हुआ है। यह मुद्रित प्रलेखों का डिजीटल रूपान्तरण है जो इलेक्ट्रानिक तरीके

से प्राप्त एवं संग्रहीत किया जाता है और इसे पर्सनल कम्प्यूटर पर पढ़ा जा सकता है। ई– प्रलेखों के रूप में सर्व प्रथम डेआबेस का निर्माण किया जा रहा है लेकिन अब अनेक प्रकार की विधियों एव तकनीकियों के माध्यम से ई7 प्रलेख पढ़े जा सकते है। ई– प्रलेख प्राप्त करने के अनेक माध्यम है।

आज टेलीफोन टेलीग्राम फैक्स ई–मेल विडियो टैक्स टेली टेक्स्ट इण्टरनेट आदि ई– प्रलेखों को आसानी से प्राप्त किया जाता है । किसी भी प्रलेख का इलेक्ट्रानिक प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य सूचना को त्वरित गति से प्रसारण करना है। इलेक्ट्रानिक प्रकाशन प्रक्रिया द्वारा जिसमें मूल पाठ चित्र आदि हो तो उन्हें डेटा प्रोसेसिंग मशीन के माध्यम से हाइपर टेक्स्ट मशीन भाषा का प्रयोग करके इलेक्ट्रानिक रूप में निर्मित किया जा सकता है।

ई– प्रलेखों की आवश्यकता–

1– ई– प्रलेखों की विषय सूचिया कम्प्यूटर हार्डवेयर में संरक्षित होती है जिसमें उच्च श्रेणी गुणवत्ता स्क्रीन होता है।

2– उसमें ग्रन्थ पढ़ने की विशिष्ट क्षमता होती है जोकि ई प्रलेख रीडर कहा जाता है।

3– वेब पर उपलबध्र

4– डाउन लोड की सुविधा

5– संग्रहण की अपार क्षमता

6– ई–प्रलेखों के माध्यम से कम समय में विशाल ग्रन्थों का संग्रहण किया जा सकता है।

7– प्रलेखों की खोज के बिना पूरा प्रलेख पढ़ा जा सकता है।

http://www.ksijmr.com

8– ई– प्रलेख सर्विस प्रोवाइडर की वेब साइट पर मौजूद है इसलिए कुछ पैसा देकर ई प्रलेख तक पहुँचा जा सकता है।

ई– प्रलेख की विशेषताएँ–

1– ई– प्रलेख कोई जगह नही घेरते है।

2– एक ही प्रलेख को कम्प्यूटर नेटवर्क के माध्यम से अधिक व्यक्ति पढ़ सकते है।

3– यदि ई– प्रलेख में किसी प्रकार का संशोधन करना है तो आसानी से किया जा सकता है।

4– ये अत्यन्त ही कम मूल्य पर प्राप्त किया जा सकता है।

5– ई– प्रलेखों में विश्व के किसी भी स्थान पर खोज किया जा सकता है।

6– ये प्रत्येक क्षण अद्यतन एवं संशोधित की जा सकती है क्योंकि इनमें अन्तिम समय तक सूचना सम्मिलित की जा सकती है।

7– एक ही प्रलेख को कई उपयोगकर्ता एक साथ पढ़ सकते है।

8– विश्व में किसी भी स्थान पर इनका उपयोग किया जा सकता है।

ई– प्रलेखों की हानियाँ– ई– प्रलेख जितने अच्छे होते है उतनी ही उसमें कमियाँ भी रहती है जोकि ई– प्रलेख में छेड़ छाड सम्भावना पायी जाती है तथा गुप्त विचारों या प्रलेखों का रखा जाना असम्भव है जो कभी न कभी वे लोगों के बीच आ ही जाती है। आज के आधुनिक समय में जो व्यक्ति कम्प्यूटर से सम्बन्धित जानकारी नही रख पाता वह ई– प्रलेख तक नही पहुँच पाते तथा कभी कभी तो स्थिति यह हो जाती है कि जरूरी उपयोगकर्ता को सही जानकारी और सही समय पर उपलब्ध नही हो पाती है।

"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 06, Nov.-Dec. 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

ई– जर्नल्स (E- journals)- ई– जर्नल्स को आजकल ई– सीरियल्स के नाम से जाना जाता है इसलिए बौद्धिक पत्रिका का एक ऐसा स्वरूप या संसाधन है जो इलेक्ट्रानिक तरीके से प्राप्त करना ई– जर्नल्स कहलाता है। इसका तात्पर्य यह है कि इसका पूर्णरूप से प्रकाशन वेब पर उपलब्ध रहता है। इनका उद्देश्य वस्तुतः शोधकार्यों एवं अध्ययन के सन्दर्भ में संसाधन पर उपलब्ध कराना होता है। वे मुद्रित जर्नल्स की तरह ही होते है किन्तु थोड़ा अन्तर होता है जोकि तकनीकी संसाधनों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इलेक्ट्रानिक रूप होने के कारण डेटा को मेटा के रूप में रखने की क्षमता रखता है।

इस तरह ई– जर्नल्स की यह खासियत है कि ये या तो पी डी एफ रूप में या एच टी एम एल के रूप में मिलते है। कुछ जर्नल्स डी॰ ओ॰ सी॰ के रूप में तो कुछ MP3 के रूप में मिलते है। पहले के समय में अधिकांश जर्नल्स ASCII रूप में ही प्रकाशित किया जाता था तथा वर्तमान समय में भी प्रकाशित किये जाते है जोकि ई– जर्नल्स का प्रचलन काफी कम पड़ रहा है।

ई– पत्रिकाएँ (E- magazines)- ई– प्रकाशन में आज कल की तरह ई– पत्रिकाएँ अत्यधिक रूप में प्रचलित हो रही है जोकि देखा गया है कि किसी भी विषय ई– पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण होती है जो उन पर शोध भी महत्वपूर्ण होता है तथा दुनिया में किसी भी पुस्तकालय के पास इतना बजट नही होता है कि वो सभी प्रकार की सामग्री का संकलन करा सके लेकिन कुछ हद तक प्रयास किया गया है जो ई– पत्रिकाओं ने अपनी विशिष्ट विशेषताओं की जैसे खोजना सन्दर्भ लिंक तथा क्रास रिफरेन्स लिंक के कारण उपभोक्ताओं को अपनी विशेष रूप से आकर्षित किया जा रहा है तथा आधुनिक समय इनकी उपयोगिता को देखते हुए भारत में यू॰ जी॰ सी॰ इन्फोनेट

कन्सोर्टिया की स्थापना की गयी है जोकि इसका मुख्य उद्देश्य भारत में स्थापित विश्वविद्यालय शोधकर्ताओं को शोध से समबन्धित जानकारी ई– पत्रिकाओं के माध्यम से उपलब्ध कराना इसी के साथ ही देश के सभी प्रौद्योगिकी संस्थाओं IITS प्रबन्ध संस्थान IIM प्रौद्योगिकी महाविद्यालय आदि को इनके विषय से सम्बन्धित शोध कराने के उद्देश्य से इण्डेस्ट कन्सोर्टिया की स्थापना की है। इस प्रकार इलेक्ट्रानिक पत्रिकाओं के प्रकाशन विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होता है। अपनी लोक प्रियता के कारण आजकल ई– पत्रिकाएँ पुस्तकालयों में बड़ी विशाल मात्रा में प्राप्त होती है जिससे कि वैज्ञानिक या शोधकर्ता को इलेक्ट्रानिक पत्रिकाओं को किसी भी समय प्राप्त किया जा सकता है।

ई– पत्रिकाओं के उद्देश्य–

1– विभिन्न स्थानों में चल रहे शोधकार्यों को गति प्रदान करना ।

2– पत्रिकाओं के प्रकाशन से पुस्तकालय तक लगने वाले समय को कम करना।

3– शोध कार्यों के परिणामों **तथा निष्कर्षों से सम्बन्धित** अन्य शोधकर्ताओं से परिचित कराना।

4– सूचना की मांग करने में सहायता करना।

5– उपभोक्ता तथा कर्मचारियों की समय की बचत करना।

6– शिक्षा तथा अध्ययन की पद्धति को उन्नतिशील करना।

7– सूचना की त्वरित प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार की विधियाँ प्रदान की जा रही है।

डैटाबेस का तात्पर्य यह है कि डेटाओं एवं सूचना के उस संग्रह से होता है जिसका पूर्ण संचालन कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता हैं इनकी पुस्तक तथा अन्य ग्रन्थों की बजाय मुद्रित करने की

http://www.ksijmr.com

अपेक्षा किसी यन्त्र (वर्तमान कम्प्यूटर) से पठनीय प्रारूप तैयार करने पर बल दिया जा रहा है तथा इस प्रकार मशीन पठनीय प्रारूपों को ही डेटाबेस कहते है।

डेटाबेस के संरक्षण के लिए यांत्रिकी संसाधनों की महसूस होती है। अक्सर यह होता है कि जो भी डेटा कम्प्यूटर या किसी यांत्रिकी संसाधनों में संरक्षित होती है जो एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँती रहती है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते है कि यदि किसी रेस्टोरेन्ट के कमरे के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए यांत्रिकी संसाधनों का इस्तेमाल हो तो कहा जायेगा कि यह डेटा होटल का डेटा है आज के समय में हर प्रकार की सूचना डेटाबेस पर विश्वसनीय तरीके से प्राप्त किया जा सकता है।

आनलाइन खरीददारी– आनलाइन खरीददारी की प्रक्रिया में उपभोक्ता उत्पादों या सेवाओं की खरीद इण्टरनेट के माध्यम से करते है तथा इण्टरनेट के माध्यम से उपभोक्ता की मांगों को पूरा किया जा रहा है।

ई– कामर्स (E- commerce)- ई– कामर्स से विदित होता है कि बिना कागज के व्यापार की जानकारी का इलेक्ट्रानिक डेटा इण्टरचेन्ज या आदान प्रदान है। ई– कामर्स के अन्तर्गत वस्तुओं या सेवाओं को खरीद या विक्री इलेक्ट्रानिक सिस्टम जैसे –इण्टरनेट के द्वारा होता है। यह इण्टरनेट पर व्यापार है।

उपसंहार (Coclusion)– वर्तमान युग में इण्टरनेट एक प्रमुख सूचना स्रोत के रूप में उभर कर सामने आया है जो इण्टरनेट पर उपलब्ध सूचना जो ई– संसाधन के रूप में होती है। इस प्रकार उपभोक्ता द्वारा अपनी आवश्यकतानुसार सूचना की खोज की जा सकती है जोकि सूचना

http://www.ksijmr.com

की खोज में सर्च इंजन की अहम भूमिका होती है। वर्तमान समय में सभी प्रकार की सामग्री को इलेक्ट्रानिक रूप में संग्रहण किया जा रहा है जोकि सभी पुस्तकालयों के पास हर पुस्तक को खरीदने का इतना बजट नही रहता है जोकि वर्तमान समय इलेक्ट्रानिक संसाधन एक ऐसा माध्यम है जोकि एक ही प्रलेख को दूसरे स्थान तथा तीसरे स्थान पर भेजा जा सकता है जोकि उपभोक्ता की समय की बचत होती है तथा साथ ही कर्मचारियों की समय की बचत होती है। वर्तमान समय में कई संस्थाओं द्वारा वेबसाइट का विकास किया जा रहा है जिसमें सूचनाओं को संग्रह ई संसाधन (E- Resources) के रूप में होता है तथा उसके अलावा आनलाइन पब्लीकेशन (Online Publication) आनलाइन डेटाबेस (Online Database) आदि की तरह की सूचना का अभिगम पर उपलब्ध कराने पर बल दे रहे है।

इण्टरनेट सूचना संसाधन को एक ऐसा संसाधन है जिसमें सभी प्रकार के ई– बुंक्स ई– जर्नल्स ई– पत्रिकाएँ, ई– प्रलेखों आदि सभी प्रकार के संसाधन को इलेक्ट्रानिक प्रारूप पर बल दिया जा रहा है जिसे इण्टरनेट के माध्यम से सूचना को अभिगम की जा सकती है। इस प्रकार से पुस्तकालय के क्रियाकलापों का निर्वाहन करने का एक मात्र संसाधन इण्टरनेट एक वरदान है जो कभी भी किसी भी समय कहीं पर भी इससे बड़ी आसानी से सूचना प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ (Reference)-

- Bell Steven j. (2003) . Keeping- up: using e- Resource for personalized PD program, Education use Quartely , Vol. 3, p.p. 1-10.
- Sharma , U.C. Mange Ram and Dubey, T.N. (2011). Use of E-Resources in University Libraries of Uttar Pradesh: An overview, Sanchar Bulletin, vol. 1, No. 2 , p.p. 65 – 69.
- John Paul , Andu K, Dynamic of Managing Electronic Resource: Electronic Resources a Study.
- http://toc.oreilly.com/2013/05 why- e- Boovs - why green- publishing. html.
- अब आया ई– स्रोतों का जमाना, न्यूज इन हिन्दी, 2009
- Catterine c. Marshall, (2009). Reading and writing the electronics resources, Morgan and claypol publishers.

http://www.ksijmr.com